प्रपत्र 4.7

बदलते वातावरण में जल की भूमिका और प्रबंधन

कमलनयन दवे[1]
सयुंक्त निदेशक

मनमोहन सिंह[1]
नायब कार्यपालक इंजीनियर

[1]गुजरात इंजीनियरिंग रिर्सच इन्स्टीट्यूट रेसकोर्स, वडोदरा

सारांश

जल आदिकाल से मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा हैं। अभिन्न अंग होने के बावजूद भी जल को वह महत्व नहीं मिला, जिसका वह हकदार रहा है। जीवन के वहन में जल को पिछली सदी के आखरी चातुरांश तक पीछे की सीटों में स्थान दिया जाता रहा है। लेकिन इसके बाद से जल को महत्व का स्थान दिया जाने लगा है और नये मिल्लेनियम की प्रथम सदी में तो जल को बहुत ही महत्व दिया जाने लगा है, अब तो जल आगे की सीटों में सम्मान के साथ बैठ रहा है। इस सम्मान के मिलते ही जल संसाधनों को आदर से देखा जाने लगा है। यहाँ तक कि जल संसाधनों का महत्व आँका जाना, योग्य देख–रेख, भंडार बनाना, मितव्ययी उपयोग और जल की समय और स्थान संबंधी असमानता को दूर करने की तरफ खूब ध्यान दिया जाने लगा है, जिसे देखा और महसूस भी किया जा रहा है। जल के प्रबंधन की तरफ बढ़ते हमारे कदम तब ही पूर्ण कहलायेंगे जब हम जल, वातावरण और प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को समुचित तौर पर समझने का प्रयास करेंगे। जल का प्रबंधन एक हाथ की कला और हथियार नहीं है इस प्रबंधन में तो बहुत सी संस्थाओं , विविध ज्ञान का संगम और लोगों का सहयोग लेना जरूरी होता है।

हमारे जल संसाधन प्रकृति की गोद में स्थित हैं और इसके आस–पास के वातावरण को सीधे प्रभावित करते हैं, जल संसाधनों के आस–पास का मौसम एक लंबे समय के बाद, वहां के वातावरण को बनाता है और एक आखरी स्वरुप देता है। मौसम स्थानिक है और जो अंतिम चरण में वातावरण को प्रभावित करता है। मानव की दिनचर्या, जीवन निर्वाह, जिससे वो स्थानिक जगह को प्रदूषित करता है, यह स्थानिक प्रदूषण एक बड़ा आकार लेकर वातावरण को प्रभावित करता है। वातावरण फिर जल संसाधनों को अपने प्रभाव में ले लेता है। इस तरह मानव जल संसाधनो को प्रभावित करता है। ग्लोबल वार्मिंग जिसका एक ज्वलंत उदाहरण है। एक उत्तम प्रकार के जल प्रबंधन के लिए एक ठोस योजना की जरूरत है। जिसके प्रथम चरण में डेटा–बेस बनाना, जल संबंधी जानकारियों को एकत्रित करना होगा। दूसरे चरण में एकत्रित जानकारियों का विश्लेषण करना होगा और अंतिम चरण में एक ऐसी प्रबंध व्यवस्था का विकास करना पड़ेगा जो बदलते वातावरण के सामने, जल संसाधनों को बचाकर उन्हें और ज्यादा जन उपयोगी बना सकें। जल स्रोत यात्रा की शुरूआत से अंतिम पड़ाव तक, विभिन्न रास्तों से और सभ्यताओं से गुजरते हुऐ अपने साथ विविधता निहित करते हैं, जिस कारण उपभोक्ताओं को जल संबंधी जानकारी से परिचित करवाने का अभियान भी चलाना जरूरी है। अतः हमारी जल संस्थाओं को और भी मजबूत और स्वतंत्र करना पड़ेगा।

भारत में जल की कमी नहीं है। आज की तारीख में वातावरण जल पर बहुत हावी भी नहीं है। परंतु हमें एक सम्पूर्ण जल प्रबंध व्यवस्था को स्थानिक परिवेश में विकसित करना पड़ेगा, जिससे कि हम भविष्य में आने वाली वातावरण संबंधी समस्याओं से जूझने के लिए अपने जल संस्थानों को तैयार कर सकें। सामान्यतः अनुभव से देखा गया है कि जल संस्थानों के प्रबंधन, रख–रखाव व देख–रेख के सम्बन्ध में आने वाले समय के लिए तब्बकावार आयोजन की जरूरत रहेगी, आधुनिक तकनीकों जैसे की सुदूर संवेदन, भौगोलिक सूचना पद्धति का उपयोग, नवीनतम उपकरणों का उपयोग, कार्बन पदचिन्ह और जल संसाधनों की गुणवत्ता वगैरह को बढ़ावा देना पड़ेगा। प्रबंधन से जुड़े मुद्दे जैसे कि जल को प्राथमिकता देना, पर्यावरण को राष्ट्रीय मुद्दा बनाना, कानून में सुधार करना, विभिन्न स्तरों पर उचित जानकारी देना। जल के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाकर सामूहिक सोच में बदलाव लाना होगा।

प्रारम्भिक

इस पृथ्वी पर जल को एक सर्व–व्याप्त और जरूरी वस्तु के तौर पर देखा जा सकता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो जल मुख्य पांच तत्वों में से एक है। जल को खूब धार्मिक और पवित्र मनोभावना के साथ देखा जाता है। भारत देश में नदियों के किनारों पर बहुत सी सभ्यताओं को फलते–फूलते देखा गया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक, जल मानव के जीवन का भाग रहा है और महत्वपूर्ण योगदान देता आया है। भारत के प्रत्येक धार्मिक ग्रंथों में जल का महत्व, संरक्षण और सही उपयोग को वर्णित किया गया है। आदिकाल में कृत्रिम जल स्त्रोत कभी भी निर्मित नहीं हुये और ना ही यह उस काल की जरूरत रहे। उस काल में तो कुदरती जल संसाधनों को उपयोग में लाया जाता था। समय बीतते मानव–सर्जित जल संसाधनों को बनाते समय, कुदरती साम्य का खूब ख्याल रखा जाता है और ये साम्य न बिगड़े इसका भी ध्यान रखा जाता है। पर्यावरण के महत्व के अंग जैसे कि वनस्पति और प्राणी एक दूसरे के पूरक बनते हैं। देखा गया है कि कुदरती संसाधन इस भार के सहने में असमर्थ बने और इनका बिगड़ना शुरू हुआ। बढ़ती जनसंख्या को जीवित रखने के लिए उद्योगों को बढ़ावा मिला और नाना प्रकार के उद्योगों ने वातावरण में कार्बन व अन्य विषैली गैसों को फेकना शुरू किया, जिसे फिर जी.एच.जी गैसों के नाम से जाना गया।

वातावरण में अविरत फेकी जाने वाली इन गैसों ने पृथ्वी के सामान्य तापमान को बढ़ने में योगदान दिया और इस प्रक्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न वैश्विक परिस्थिति को ग्लोबल–वार्मिंग के तौर पर जाना गया और यह शब्द अब बदलते–बिगड़ते वातावरण का प्रयार्य बन कर उभरा है। अब इसके परिणाम–स्वरुप ध्रुवों पर आच्छादित बर्फ पिघलने लगी है और समुद्रों के जल स्तर में बढ़ोतरी हो रही है। परिणाम स्वरुप मानव–जाति को पृथ्वी की सतह के ओर अन्दर धकेला जा रहा है। रहने की जगह कम पड़ रही है। उपजाऊ जमीन की कमी महसूस की जा रही है बढ़ते तापमान के कारण जल संसाधनों के जल स्तर से जल भाप बन कर उड़ रहा है और जिसकी पूर्ति नहीं हो रही है। जल जीवन का महत्व पूर्ण अंग होने के कारण और सब प्रकार की दैनिक क्रियाओं में इसका उपयोग होने के

कारण जल की कमी ने अपना व्यापक असर छोड़ा है। अब वैश्विक अनाज उत्पादन घट रहा है, उद्योग–उत्पादन घट रहा है और बढ़ते जन समुदाय के प्रति व्यक्ति की पहुँच से बाहर हो रहा है। साथ–साथ जिस वर्ग पर गंभीर असर पड़ रहा है वो गरीब वर्ग है और वो दिन–प्रति–दिन और भी गरीब होता जा रहा है। भारत की दशा को देखें तो वातावरण ने अपना गंभीर असर अभी नहीं छोड़ा है। लेकिन देखे जाने वाले बदलाव के चिन्ह, आने वाले कल के बारे में बता रहे है,, हमें जगा भी रहे हैं और आने वाले भविष्य के लिए तैयार भी कर रहे हैं।

सम्बन्धित शब्दावली

आगे बढ़ने से पहले सम्बंधित शब्दावली से परिचित होना जरूरी होगा, इस तरह से लेख को अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

एनवॉयरमेंट (पर्यावरण) : किसी भी चीज के चारों तरफ के बोध को पर्यावरण कहा जा सकता है। पर्यावरण हमारे आस–पास हमारे घरों, बगीचों, शहर, दुकानों, पर्वतों और समुन्द्रों को समुचित तौर से दर्शाता है। वातावरण हमें प्रेरित करता है, जैसे कि हम मरूस्थल में घुटन और हरे–भरे बाग–बगीचे में प्रफुल्लता महसूस करते हैं।

क्लाइमेट (जलवायु, मौसम) : सामान्य या फिर विशेष मौसम/जलवायु संबंधी परिस्थितियां ही उस जगह के मौसम/जलवायु को प्रदर्शित करती हैं।
एनवायरमेंटल चेंज (पर्यावरण में बदलाव) : कुदरती अथवा मनुष्यों द्वारा की गयी क्रियाओं के फलस्वरूप वातावरण में उत्पन्न हलचल।

क्लाइमेट चेंज (जलवायु में बदलाव) : इसे एक लम्बे अरसे, (जो कि एक दशक से लाखों वर्ष का हो सकता है,) के दरम्यान मौसम के परिबलों के सांख्यकी परिवर्तन से उत्पन्न, सघन आकार का बदलाव कहा जा सकता है।
ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक गर्मी) : यह पृथ्वी की सतह, इसके ऊपर या समुन्द्र के ऊपर के सामान्य तापमान में देखी जा रही बढ़ोत्तरी है।

सस्टेनेबिलटी (सहन करने की क्षमता) : जैसा कि इस शब्द से ही प्रदर्शित हो रहा है यह सहन करने की क्षमता या सहनशीलता है। पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में यह शब्दावली खूब प्रचलित हुई है। कोई भी विकास जिससे वातावरण को असर ना पहुँचे और पर्यवरण ना बिगड़े तो इस प्रकार का विकास सस्टेनेबल यानी कि सहन करने की क्षमता, रखने वाला कहा जायेगा।

सस्टेनेबल डेवलेपमैंट (सहन करने की क्षमता रखने वाला विकास) : इस तरह का विकास जो आज की मांग के अनुसार हो और आने वाले भविष्य की पीढ़ी की जरूरतों को भी पूरा करता हो।

मीटीगेशन (नुकसान कम करने का जरिया) : इसे एक प्रक्रिया कहा जा सकता है कि जिसके द्वारा विपत्ति से उत्पन्न नुकसान की मात्रा और असर को कम किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में नुकसान की गंभीरता को कम कर देना।

एडाप्टेशन (अपनाना, अनुकूलन, रूपांतरण) : यह खुद को बदलाव के अनुसार बदलकर, बदलाव के लायक बना कर पेश होना। दूसरे शब्दों में खुद को परिवर्तन के अनुरूप ढाल लेना।

होलिस्टिक एप्रोच (साकल्यवादी पहुँच, पवित्र ढंग से) : इसे एक ऐसा कदम कहा जा सकता है जिसके परिणाम स्वरुप सम्बंधित इश्यू को प्लानिंग, निर्णय और योजना कार्य काल के दरम्यान शामिल किया जाता है। इसमें समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व जरूरी और उनके सामाजिक हकों का सम्मान किया जाता है और सामाजिक जिम्मेदारियां पूर्ण की जाती हैं।

जलवायु में बदलाव और पर्यावरण

क्लाइमेट चेंज (मौसम में बदलाव), एक लम्बे अरसे (जो की एक दशक से लाखों वर्ष का हो सकता है) के दरम्यान मौसम के सांख्यकी परिवर्तन से उत्पन्न, सघन आकार का बदलाव कहा जा सकता है। यह बदलाव एक जगह देखे जा रहे सामान्य मौसम के बदलाव को भी कहा जा सकता है। ये बदलाव वैश्विक भी हो सकता है। भारत की जल–संग्रहण योजनाओं के मद्देनजर देखा गया है कि जलवायु के बदलाव के सम्बन्ध में खतरे की अंतिम घंटी अभी बजी नहीं है, लेकिन इसका यह मतलब भी नहीं है की इस मुद्दे की उपेक्षा की जाये। इसका यह कारण भी हो सकता है की भारत की नदियाँ बारहमास बहती हैं। मौसम के बदलाव के कारण उस समय के दरम्यान आने वाली आवक पर कुछ खास असर नहीं पड़ता है। परन्तु ज्यादा असरकर्ता परिबल मानव सर्जित कहे जा सकते हैं, जैसे कि वाटर–बेसिन में बस रहे लोगों का अन्यत्र स्थानांतरण और शहरीकरण को बढ़ावा देना। इस सम्बन्ध में बांधों के नीचवास में नदी और इसके पश्चात बाढ़ से प्रभावित इलाकों का महत्व घट जाता है और यह इलाका बदलते पर्यावरण से ज्यादा प्रभावित होता है। नदी के इस भाग का ध्यान रखा जाना जरूरी है और इस पर सम्पूर्ण दृष्टि रखना और भी जरूरी बन जाता है।

प्रक्रिया

इस के अंतर्गत लिये जाने वाले कदम और प्रक्रिया त्रि–स्तरीय हो सकती है।
प्रथम : सम्बंधित डेटा एकत्रित करना, जल–शास्त्र संबंधी जानकारियों को एक स्तर पर लाकर एक समुचित पद्धति का विकास और क्षमता बढ़ाना।
द्वितीय : जल–शास्त्र संबंधी जल–शास्त्रीय सीमाओं की जानकारी, जल की गुणवत्ता, प्रदूषित–जल प्रबंधन, पेय–जल प्रबंधन, जमीन उपयोग में आ रहा बदलाव, जल संबंधी वातावरण।

तृतीय : एकत्रित डेटा और जानकारी के आधार पर जल–वातावरण संबंधी समस्याओं का निराकरण करना और बदलते वातावरण को अपनाना या उसके लिए खुद को सजग करना।

डेटा को निचले स्तर पर की गयी "कपोल कल्पना" की संज्ञा दी जा सकती है, पर यह एक महत्वपूर्ण जानकारी देता है, जिससे ज्ञान की उत्पत्ति होती है। इस सम्बन्ध में सभी डेटा जल–शास्त्र से जुड़ा है। बहुत कारणों से, जल–शास्त्र संबंधी डेटा कभी भी गंभीरता से एकत्र नहीं किया जाता है। शायद इसका मुख्य कारण भूतकाल में साधनों की कमी का होना हो। आजकल बाजार में मिल रहे उपकरण उन दिनों उपलब्ध नहीं थे। लेकिन इस आधुनिक काल में, यथार्थ–काल आंकड़े, आधुनिक उपकरणों द्वारा सुदूर पद्धति से लिये जाते हैं। कम वर्षो के डेटा के गहन अभ्यास और पृथक्करण द्वारा एक ट्रेंड जानी जा सकती है और विचारधारा निर्मित होती है।

इसके इलावा मौसम संबंधी डेटा महत्व का होता है। इसमें ऊपर बताई गयी व्यवहारिकता की कमियां देखी जा सकती हैं। लेकिन यहाँ आधुनिक तकनीकी उपकरण हमारे लिये उपयोगी होते हैं और हम परिशुद्ध जानकारी हासिल कर सकते हैं।

कुछ इस तरह ही नदी के प्रदूषण की जानकारी भी हमें मिल रहे पानी की शुद्वत्ता के बारे में बता सकती हैं और कहाँ और किस तरह से इस उपलब्ध पानी का सदुपयोग हो सकता है। इस तरह उपलब्ध जानकारी के आधार पर, गणितीय– प्रतिरूप बनाकर उसके अनुरूपण द्वारा, महत्व के निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। गणितीय–प्रतिरूप यथार्थ–प्रतिरूप से सस्ता और कम समय में बनाया जा सकता है।

जल संसाधन प्रबंधन के लिये समन्वित कदम

समन्वित बाढ़ प्रबंधन जैसे कदम उठाकर हम बाढ़–ग्रस्त इलाके में कार्य कर सकते हैं। लोगों को बाढ़ के दुष्प्रभाव से बचा सकते हैं। जान माल की हानि कम कर सकते हैं। बाढ़ के खतरे को कम कर सकते हैं। पर्यावरण और जैविकीय–विविधता का परिरक्षण कर सकते हैं। इस पद्धति को अपनाकर आने वाली विपदाओं का सामना कर सकते हैं।

जल सुरक्षा का महत्व

जल सुरक्षा का मतलब है व्यर्थ जल को रोककर एकत्र करके उसकी सुरक्षा करना किसी भी जन समुदाय की लगातार पानी पाने की मांग बढ़ती जनसंख्या शहरीकरण, जमीन का नमकीनीकरण और प्रदूषण से प्रभावित होती है। भारत जल सुरक्षा को समुंद्र में व्यर्थ बह जाने वाले जल को रोककर बढ़ा सकता है। यह काम समस्त नदियों को जोड़कर भी किया जा सकता है। इस तरफ राज्यों ने अपने स्तर पर प्रयत्न शुरू भी कर दिए हैं। जल संग्रह को जलवायु के असर से बचाते हुए व्यर्थ बह रहे जल को रोककर सदुपयोग किया जाए।

बड़े बाँधों की भूमिका

भूतकाल में बड़े बांधों के निर्माण को लेकर खूब हल्ला मचाया गया। लेकिन आजादी के बाद बने बांधों के लाभों को देखकर प्रतीत हो रहा है कि जल संग्रह ने भारत को जल प्रचुर बनाने में योगदान दिया है। बड़े बांधों के निर्माण को रोकना भारत के लिए ठीक नहीं है। यहाँ यह बताना जरूरी होगा कि जल से उत्पादित बिजली पर्यावरण को बिगाड़ती नहीं है। जबकि कोयले से उत्पादित बिजली से पर्यावरण को होने वाले नुकसान से हम भलीभांति परिचित हैं।

प्रौद्योगिकी

आज के समय में टैक्नोलॉजी खूब विकसित हुई है। सरलता से उपलब्ध है और सस्ती भी। जिसका उपयोग जल को जलवायु के असर से बचाने के लिए किया जा सकता है। इस संबंधी सभी क्रियायें कम समय और स्वयंसंचालित ढंग से निभायी जा सकती हैं। बांधों की देख–रेख और संचालन सुदूर यथार्थ–काल पद्धति से किया जा सकता है। बहुत से सोफ्टवेयर भी उपलब्ध हैं। जल प्रबंधन, नेटवर्क की मदद से सरल बनाया जा सकता है। इन्टरनेट व ई–मेल द्वारा संपर्क सरल बना है।

जल और क़ानून

जल के संबंध में कानून की अपनी विशेष भूमिका रहेगी। कानून के अंकुश में जल और भी सुरक्षित, प्राप्य, सरल और सस्ता बनेगा। जल–प्रबंधन से जुड़े तमाम इश्यू को मर्यादा में नियमों का पालन करते हुए जल को विकसित करना पड़ेगा। जल की जिम्मेदारी और जवाबदेही सभी भारतीयों की होनी चाहिए।

नया जल खूबसूरत जल

जल अपना चेहरा बदल चुका है। जल अब और भी आकर्षक, खूबसूरत, शुद्व और फैशनेबल दिख रहा है। अब जल को कोने में मिट्टी के घड़ों में पड़े रहना पसंद नहीं है। वो आजकल खूबसूरत और चलते–फिरते लोगों के हाथों में दिख रहा है। आजकल ग्रामीण इलाकों में बड़े–बड़े जारों में सरलता से उपलब्ध कराया जा रहा है। निजी कंपनियां, सामाजिक जिम्मेदारियों से दूर, पानी बेचकर अपने मुनाफे में पड़ी हैं। फिर भी जल–जन्य रोग बढ़ रहे हैं। विकासशील देशों में युद्व से ज्यादा तो लोग दूषित पानी पीकर मर रहे हैं। निजी कंपनियां, सामाजिक जिम्मेदारियों से दूर, पानी बेचकर अपनी मुनाफे को बढ़ाने में पड़ी हैं। इस विषम काल में हम सब की नजरें सरकार और जन समुदाय के सामूहिक कार्यों पर टिकी हैं ताकि जल अपने मूल स्वरुप को फिर से मुख्य तत्व, जल तत्व के तौर पर, मुक्त होकर, उभर कर आये।

जल संबंधी अनुभव और भविष्य के लिए तैयारी

गुजरात की नदियों के ऊपर किये गए कार्यों और रख–रखाव के दरम्यान हासिल किये गए अनुभवों के मद्देनजर, आने वाले समय के लिए किस तरह तैयार होना पड़ेगा, इस बारे में चित्र स्पष्ट होता है। देखा गया है कि जल संसाधन यानि कि जलाशय तैयार करने के बाद उन्हें उपेक्षित अवस्था में छोड़ दिया जाता है, संसाधनों के प्रति उदासीनता देखी जाती है। जल संसाधनों के उच्च वास (स्त्राव क्षेत्र) में समुचित विकास का अभाव दिखता है। जिसके कारण जलाशयों तक आलेखित पूरे जल की मात्रा पहुँच नहीं पाती। इस तरह की उपेक्षा जलाशयों के नीच–वास में देखी जाती है जिसके कारण जल के प्राकृतिक बहाव में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। इन अनुभवों के आधार पर भविष्य के लिए तैयारी, नीचे वर्णित मुद्दों को ध्यान में रखते हुए करनी होगी।

- जल और जल संसाधनों के प्रति उदासीनता दूर करनी होगी।
- जल स्त्राव प्रदेश का समुचित विकास करना होगा।
- बाढ़ प्रदेश की जोनिंग करने के पश्चात उसका सीमित विकास करना होगा।
- सुदूर संवेदनशील पद्धति अपनाकर इसे जी. आई. एस . पद्धति के साथ संकलित कर बाढ़ प्रदेश के संभावित अवरोधों को दूर करना।
- रिमोट कैमरा (नेटवर्किंग) द्वारा बाँधों की सतत देख–रेख करनी होगी।
- कार्बन पदचिन्हों को पहचानना होगा और दूर करना होगा।

उपसंहार

जल एक दुर्लभ सामग्री बनती जा रही है। आज के इस समय में भारत जल प्रचुर राष्ट्र कहा जा सकता है लेकिन आने वाला कल एक विषम परिस्थिति को जन्म दे सकता है। आंकड़ों की दृष्टि से गुजरात में पड़ने वाली बरसात प्रचुर मात्रा में दिखती है, पर प्रति व्यक्ति के हिस्से में उपलब्ध जल के आधार पर गुजरात राज्य को जल की कमी वाला राज्य कहा जा सकता है। बढ़ रही जनसंख्या और शहरों की तरफ की दौड़, आने वाले कल में जल की उपलब्धता को कम ही करेगी। ग्लोबल–वार्मिंग आज कल चर्चा में है भले ही इसका असर शुरुआती है और माप के पैमाने से दूर है। लेकिन कल हम इसके असर से बच नहीं पायेंगे। पर्यावरण और जल संबंधी बदलाव से आज हमारे जल संसाधन गंभीर असर में तो नहीं परन्तु प्रभावित तो हो ही रहे हैं। मिल रहे इस समय को वरदान समझकर जागना जरूरी है और इसका सदुपयोग कर जल संसाधनों को भविष्य के लिये तैयार करना होगा। सरकार और पब्लिक को सामूहिक तौर पर सजग होना पड़ेगा। उपलब्ध टैक्नोलॅजी (जैसे की सूदूर संवेदन, जी. आई. एस.., सॉफ्टवेयर का उपयोग कर) जल की गुणवत्ता को बढ़ावा देना होगा। लोगों को जानकारी देकर उनका सहयोग लेना होगा। जल प्रहरी खड़े करने पड़ेंगे। साथ ही साथ नये जल की और ज्यादा उपलब्धता बढ़ानी पड़ेगी। जल को सम्मान और इससे संबंधित कार्य को सेवा का दर्जा देना होगा।